HIRS KE NUQSANAT MA-A QANA-AT KI BARAKAAT
(HINDI BAYAAN)

हिर्स के नुक़्सानात मअ़ क़नाअ़त की बरकात

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हिर्स के नुक़्सानात मअ क़नाअ़त की बरकात

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसाफ़ह़ा करें और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (مسند ابی یعلی، ۳/۹۵، حدیث:۲۹۵۱)

गर्चे हैं बे ह़द क़ुसूर, तुम हो अ़फ़ुव्वो ग़फ़ूर
बख़्श दो जुर्मो ख़त़ा, तुम पे करोड़ों दुरूद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، سہل بن سعد الساعدی... الخ، ۶/۱۸۵، حدیث:۵۹۴۲)

www.dawateislami.net

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ۞ देख कर बयान करूंगा। ۞ पारह 14 सूरतुन्नह्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَ لَوْ اٰيَةً ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा। ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा। ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा। ۞ क़ह्क़हा लगाने और

www.dawateislami.net

लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर हत्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिर्स की तबाहकारियां

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **'उ़यूनुल हिकायात'** जिल्द नम्बर 2 सफ़ह़ा नम्बर 396 पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक दिलचस्प व सबक़ आमोज़ ह़िकायत नक़्ल की है कि किसी घर में एक अ़जीबो ग़रीब सांप रहा करता था जो रोज़ाना सोने का एक अन्डा दिया करता था । घर का मालिक मुफ़्त की दौलत मिलने पर बहुत ख़ुश था । उस ने घर वालों को ताकीद कर रखी थी कि वोह येह बात किसी को न बताएं । कई माह तक येह सिलसिला यूंही चलता रहा । एक दिन सांप अपने बिल से निकला और उस ने उन की बकरी को डस लिया । उस का ज़ह्र ऐसा जान लेवा था कि देखते ही देखते बकरी की मौत वाक़ेअ़ हो गई । येह देख कर उस के घर वाले घबरा गए मगर उस शख़्स ने येह कह कर उन्हें तसल्ली दी कि "हमें सांप से मिलने वाला नफ़्अ़ बकरी की क़ीमत से कहीं ज़ियादा है, लिहाज़ा परेशान होने की ज़रूरत नहीं ।" कुछ अ़र्से बा'द सांप ने उन के पालतू गधे को डस लिया जो फ़ौरन मर गया । अब तो वोह शख़्स भी घबरा गया मगर लालच के मारे उस ने फ़ौरन ख़ुद पर क़ाबू पाया और कहने लगा : मैं देख रहा हूं कि येह सांप हमें मुसल-सल नुक़्सान पहुंचा रहा है मगर जब तक येह नुक़्सान जानवरों तक मह़दूद है मैं सब्र करूंगा इस के बा'द नहीं । फिर दो साल का अ़र्सा गुज़र गया मगर सांप ने किसी को नहीं डसा, अहले ख़ाना भी अपने जानवरों के नुक़्सान को भूल गए । फिर एक दिन सांप ने उन के ग़ुलाम को डस लिया । उस बेचारे ने मदद के लिये अपने मालिक को पुकारा, मगर इस से पहले कि मालिक उस तक पहुंचता, ज़ह्र की वज्ह से ग़ुलाम का जिस्म फट चुका था । अब वोही शख़्स परेशान हो कर कहने लगा : इस सांप का ज़ह्र तो बहुत ख़त़रनाक है, इस ने जिस जिस को

www.dawateislami.net

डसा वोह फ़ौरन मौत के घाट उतर गया, अब कहीं येह मेरे घर वालों में से किसी को न डस ले । कई दिन इसी परेशानी में गुज़र गए कि इस सांप का क्या किया जाए ? दौलत की **हिर्स** ने एक बार फिर उस शख़्स की आंखों पर पट्टी बांध दी और उस ने येह कह कर अपने घर वालों को मुत़मइन कर दिया कि अगर्चे इस सांप की वज्ह से हमें नुक़्सान हो रहा है मगर सोने के अन्डे भी तो मिलते हैं लिहाज़ा हमें ज़ियादा परेशान नहीं होना चाहिये । कुछ दिनों बा'द सांप ने उस के बेटे को डस लिया । फ़ौरन तिर्याक़ (या'नी ज़ह्र का असर ख़त्म करने वाली दवा) का इन्तिज़ाम किया गया लेकिन उस का कोई फ़ाइदा न हुवा और उस लड़के की मौत वाक़ेअ़ हो गई । जवान बेटे की मौत मियां-बीवी पर बिजली बन कर गिरी और वोह दोनों ग़ज़बनाक हो कर कहने लगे : अब इस सांप में कोई भलाई नहीं, बेहतर येही है कि इस मूज़ी को फ़ौरन क़त्ल कर दिया जाए । सांप ने उन की येह बातें सुनी तो वोह कुछ दिनों के लिये ग़ाइब हो गया, इस त़रह़ उन्हें सोने का अन्डा भी न मिल सका । जब काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया तो सोने का अन्डा न मिलने की वज्ह से उन की लालची त़बीअ़त में बेचैनी होने लगी, चुनान्चे दोनों मियां-बीवी सांप के बिल के पास आए, और धूनी दे कर गोया उसे सुल्ह़ का पैग़ाम दिया । ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर वोह वापस आ गया और उन्हें फिर से सोने का अन्डा मिलने लगा । मालो दौलत की **हिर्स** ने उन्हें अन्धा कर दिया और वोह अपने बेटे और ग़ुलाम की मौत को भी भूल गए । फिर एक दिन सांप ने उस की ज़ौजा को सोते में डस लिया, औ़रत चिल्लाई तो शोहर ने फ़ौरन तिर्याक़ के ज़रीए़ उस का इलाज करना चाहा मगर थोड़ी ही देर में उस ने भी तड़प तड़प कर जान दे दी । अब वोह लालची शख़्स अकेला रह गया तो उस ने सांप वाली बात अपने भाइयों और दोस्तों को बता ही दी । सब ने येही मश्वरा दिया कि तुम ने बहुत बड़ी ग़लत़ी की, अब भी वक़्त है संभल जाओ और जितनी जल्दी हो सके इस ख़त़रनाक सांप को मार डालो । चुनान्चे, घर आ कर वोह शख़्स सांप को मारने के लिये घात लगा कर बैठ गया । अचानक उसे सांप के बिल के

www.dawateislami.net

क़रीब एक क़ीमती मोती नज़र आया जिसे देख कर उस की लालची त़बीअ़त ख़ुश हो गई । दौलत की हवस ने उसे सब कुछ भुला दिया, वोह कहने लगा : वक़्त त़बीअ़तों को बदल देता है, यक़ीनन इस सांप की त़बीअ़त भी बदल गई होगी कि जिस त़रह़ येह सोने के अन्डों के बजाए अब मोती देने लगा है, इसी त़रह़ इस का ज़ह़र भी ख़त्म हो गया होगा, लिहाज़ा अब मुझे इस से कोई ख़त़रा नहीं । येह सोच कर उस ने सांप को मारने का इरादा तर्क कर दिया । रोज़ाना एक क़ीमती मोती मिलने पर वोह लालची शख़्स बहुत ख़ुश रहने लगा और सांप की पुरानी धोकेबाज़ी को भूल गया । एक दिन उस ने सारा सोना और मोती एक बरतन में डाल कर उसे दफ़्ना दिया और उस जगह पर सर रख कर सो गया । उसी रात सांप ने उसे भी डस लिया । जब उस की चीख़ें बुलन्द हुईं तो उस के पड़ोसी, रिश्तेदार और दोस्त अह़बाब भागम भाग वहां पहुंचे और उस की ह़ालत देख कर कहने लगे कि तुम ने इसे मारने में सुस्ती की और लालच में आ कर अपनी जान दाव पर लगा दी । लालची शख़्स शर्म के मारे कुछ न बोल सका, सोने से भरा बरतन निकाल कर उन के ह़वाले कर दिया जिसे देख कर वोह सब कहने लगे कि आज के दिन येह माल तेरे किसी काम का नहीं क्यूंकि अब येह दूसरों का हो जाएगा फिर कुछ ही देर में उस का इन्तिक़ाल हो गया । (عیون الحکایات، الحکایۃ الثامنۃ بعد الخمسمائۃ، ص۴۳۹، ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा कि मालो दौलत की **हिर्स** ने हंसते बसते घराने को उजाड़ कर रख दिया ! यक़ीनन ह़रीस की निगाह मह़दूद होती है जो सिर्फ़ वक़्ती फ़ाइदा देखती है जिस की वज्ह से वोह दुरूस्त फ़ैसले करने में नाकाम रहता है और नुक़्सान उठाता है । बयान कर्दा ह़िकायत में घर के सर बराह को संभलने के कई मवाक़ेअ़ मिले । यूं कि जब पहले पहल गधे और ग़ुलाम को सांप ने शिकार किया था तो येही उस के लिये ख़त़रे की घन्टी थी कि वोह शख़्स होशयार हो जाता और आइन्दा ह़िर्स से हमेशा के लिये किनारा कशी इख़्तियार करते हुवे आइन्दा ऐसे दर्दनाक वाक़िआ़त की

www.dawateislami.net

रोक थाम का इन्तिज़ाम करता मगर अफ़्सोस ! उस ने इस वाक़िए़ से इ़ब्रत ह़ासिल करने के बजाए इसे नज़र अन्दाज़ कर दिया क्यूंकि उस बद नसीब पर तो सोने का अन्डा मिलने की ह़िर्स का ख़ुमार चढ़ा हुवा था लिहाज़ा सांप ने इसी पर बस न किया बल्कि ह़रीस की ग़फ़्लत का भरपूर फ़ाइदा उठाते हुवे उस के बेटे और बीवी को भी मौत के घाट उतार दिया । भाइयों और दोस्तों की नसीह़त के बा वुजूद ह़िर्स की वज्ह से वोह उस सांप को न मार सका जिस के नतीजे में वोह ख़ुद भी मौत के मुंह में जा पहुंचा ।

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की ब दौलत
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआने करीम में पारह 5 सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 128 में ह़िर्स का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ के साथ किया गया है :

وَ اُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ (پ۵، النسآء:۱۲۸) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और दिल लालच के फन्दे में हैं ।*

तफ़्सीरे ख़ाज़िन में इस आयते मुबारका के तह़्त है : लालच दिल का लाज़िमी ह़िस्सा है क्यूंकि येह इसी त़रह़ बनाया गया है ।

(تفسیرِ خازن، پ۵، النسآء، تحت الآیۃ: ۱۲۸، ۱/۴۳۷)

ह़िर्स किसी भी चीज़ की हो सकती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़म त़ौर पर येही समझा जाता है कि **ह़िर्स** का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ मालो दौलत के साथ होता है ह़ालांकि ऐसा नहीं क्यूंकि **ह़िर्स** तो किसी भी चीज़ की मज़ीद ख़्वाहिश करने का नाम है ख़्वाह वोह चीज़ माल हो या कुछ और, जैसा कि शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : लालच और **ह़िर्स** का जज़्बा ख़ूराक, लिबास, मकान, सामान, दौलत, इ़ज़्ज़त, शोहरत अल ग़रज़ हर ने'मत में हुवा करता है । (जन्नती ज़ेवर, स. 111) चुनान्चे, मज़ीद माल की

www.dawateislami.net

ख़्वाहिश रखने वाले को 'माल का ह़रीस' कहेंगे तो मज़ीद खाने की ख़्वाहिश रखने वाले को 'खाने का ह़रीस' कहा जाएगा इसी त़रह़ नेकियों में इज़ाफ़े के तमन्नाई को 'नेकियों का ह़रीस' जब कि गुनाहों का बोझ बढ़ाने वाले को 'गुनाहों का ह़रीस' कहेंगे।

ह़िर्स किसे कहते हैं ?

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیہ इरशाद फ़रमाते हैं : दराज़िये उ़म्र (या'नी लम्बी उ़म्र) की आरज़ू अमल (या'नी ख़्वाहिश) है और किसी चीज़ से सैर न होना, हमेशा ज़ियादती की ख़्वाहिश करना ह़िर्स (कहलाता है)। येह दोनों चीज़ें अगर दुन्या के लिये हैं तो बुरी हैं (और) अगर आख़िरत के लिये हैं तो अच्छी, इस लिये दराज़ (या'नी लम्बी) उ़म्र चाहना कि अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की इ़बादत ज़ियादा कर लूं, अच्छा है। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/86) मा'लूम हुवा कि ह़िर्स के अच्छा और बुरा होने का दारो मदार उसी चीज़ पर है कि जिस के ह़ुसूल की ह़िर्स मत़लूब है। अगर इस का तअ़ल्लुक़ त़ाअ़ात व इ़बादात से हो तो ऐसी ह़िर्स हरगिज़ मज़मूम (या'नी बुरी) नहीं नीज़ येह भी पता चला कि येह मालो दौलत के साथ ख़ास नहीं बल्कि इस की नुहूसत कई उमूर में कार फ़रमा हो सकती है। ह़रीस इन्सान इन्तिहाई क़ाबिले रह़्म होता है क्यूंकि उस पर हर लम्ह़ा अपनी ह़िर्स को अ़मली जामा पहनाने का भूत सुवार रहता है और फिर आगे चल कर येही मूज़ी मरज़ उसे गुलामी की ज़न्जीरों में जकड़ देता और ख़ूब रुस्वा करवाता है चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ رَحمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं कि ह़िर्स येह है कि इन्सान कभी इस चीज़ की कभी उस चीज़ की त़लब में रहता है यहां तक कि वोह सब कुछ ह़ासिल कर लेना चाहता है और इस मक़्सद के ह़ुसूल के लिये उस का वासित़ा मुख़्तलिफ़ लोगों से पड़ता है। जब वोह उस की ज़रूरतें पूरी करेंगे तो (अपनी मरज़ी के मुत़ाबिक़) उस की नाक में नकील डाल कर जहां चाहेंगे ले जाएंगे, वोह उस से अपनी इ़ज़्ज़त चाहेंगे ह़त्ता कि

www.dawateislami.net

ह़रीस रुस्वा हो जाएगा और इसी मह़ब्बते दुन्या के बाइ़स जब भी वोह उन के सामने से गुज़रेगा तो उन्हें सलाम करेगा और जब वोह बीमार होंगे तो इ़यादत करेगा मगर उस के येह तमाम अफ़्आ़ल ख़ुदा की रिज़ा के लिये नहीं होंगे। (مکاشفۃ القلوب، الباب الثالث و الثلاثون، فی فضل القناعۃ، ص۱۲۴ بتغیر قلیل) आइये ! हिर्स की आफ़तों पर मब्नी तीन रिवायात सुनते और नसीह़त के मदनी फूल चुनते हैं : चुनान्चे,

हिर्स के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1. लोग कहते हैं या तुम में से कोई कहने वाला कहता है कि लालची इन्सान ज़ालिम से ज़ियादा धोकेबाज़ होता है ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक लालच से बड़ा ज़ुल्म कौन सा है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस बात पर अपनी इ़ज़्ज़त, अ़ज़्मत और जलाल की क़सम बयान फ़रमाता है कि जन्नत में कोई लालची या बख़ील शख़्स दाख़िल नहीं होगा।

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، الفصل الاول، حرف الباء، البخل من الاکمال، الجزء: ۲، ۳/ ۱۸۲، حدیث: ۷۴۰۴)

2. लालच से बचते रहो क्यूंकि तुम से पिछली क़ौमों को लालच ही ने हलाकत में डाला, लालच ने उन्हें झूट पर उभारा तो वोह झूट बोलने लगे, ज़ुल्म पर उभारा तो ज़ुल्म करने लगे और क़त़्ए रेह़्मी का ख़याल दिलाया तो क़त़्ए रेह़्मी करने लगे।

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، الفصل الاول، حرف الباء، البخل من الاکمال، الجزء: ۲، ۳/ ۱۸۲، حدیث: ۷۴۰۲)

3. दो भूके भेड़िये जिन्हें बकरियों में छोड़ दिया जाए वोह इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि मालो दौलत की हिर्स और हुब्बे जाह (इ़ज़्ज़त व शोहरत की मह़ब्बत) इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाते हैं।

(ترمذی، کتاب الزھد، باب۔ت: ۴۳، ۴/ ۱۶۶، حدیث: ۲۳۸۳)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़क़ीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : निहायत नफ़ीस तश्बीह है। मक़्सद येह है कि मोमिन का दीन गोया बकरी है और उस की हिर्से माल (और) हिर्से इ़ज़्ज़त गोया दो भूके भेड़िये हैं मगर येह दोनों भेड़िये मोमिन के दीन को इस से ज़ियादा बरबाद करते हैं जैसे ज़ाहिरी भूके भेड़िये बकरियों को तबाह करते हैं

www.dawateislami.net

कि इन्सान माल की ह़िर्स में ह़राम व ह़लाल की तमीज़ नहीं करता, अपने अ़ज़ीज़ अवक़ात को माल ह़ासिल करने में ही ख़र्च करता है, फिर इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने के लिये ऐसे जतन करता है जो बिल्कुल ख़िलाफ़े इस्लाम हैं जैसा आज मेम्बरी, वज़ारत चाहने वालों को देखा जा रहा है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7/19)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अह़ादीसे मुबारका और इन की शर्ह़ की रोशनी में येह बात वाज़ेह़ हो गई कि ह़िर्स के बाइ़स इन्सान के दीनो ईमान को त़रह़ त़रह़ के ख़त़रे लाह़िक़ हो जाते हैं और येह इस क़दर तबाह कुन बात़िनी बीमारी है कि इस में मुब्तला हो कर इन्सान झूट, ज़ुल्म और क़त़ए़ रेह़्मी जैसे कबीरा गुनाहों का मुर्तकिब हो जाता है, लिहाज़ा आ़फ़िय्यत इसी में है कि अपना बेंक बेलेन्स बढ़ाने, ख़ज़ानों के अम्बार जम्अ़ करने, उ़म्दा मेहंगी गाडियों में घूमने, दूसरों की जाएदादें हथयाने और ठाट-बाट से रहने की ह़िर्स पालने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जो ने'मतें अ़त़ा की गई हैं उन्ही पर क़नाअ़त करते हुवे उस की रिज़ा पर राज़ी रहते हुवे ह़िर्स की आलूदगियों से ख़ुद को बचाना चाहिये कि जो ख़ुश नसीब लोग ह़िर्स व लालच से अपने आप को दूर रखते हैं उन के लिये कामयाबी की बिशारत है चुनान्चे, पारह 28 सूरतुल ह़श्र की आयत नम्बर 9 में इरशादे ख़ुदावन्दी है :

وَ مَنۡ یُّوۡقَ شُحَّ نَفۡسِهٖ فَاُولٰٓئِکَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ۚ﴿۹﴾ (پ۲۸، الحشر:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं।*

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : लालच बहुत ही बुरी ख़स्लत और निहायत ख़राब आ़दत है, **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से बन्दे को जो रिज़्क़ व ने'मत और मालो दौलत या जाह (या'नी इ़ज़्ज़त) व मर्तबा मिला है, उस पर राज़ी हो कर क़नाअ़त कर

www.dawateislami.net

लेनी चाहिये । दूसरों की दौलतों और ने'मतों को देख देख कर ख़ुद भी उस को ह़ासिल करने के फेर में परेशान ह़ाल रहना और ग़लत़ व सह़ीह़ हर क़िस्म की तदबीरों में दिन रात लगे रहना येही जज़्बए ह़िर्स व लालच कहलाता है और ह़िर्स व त़म्अ़ दर ह़क़ीक़त इन्सान की एक पैदाइशी ख़स्लत है ।

(जन्नती ज़ेवर, 110)

ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर इन्सान के पास माल की दो वादियां भी हों तो वोह तीसरी वादी की तमन्ना करेगा और इब्ने आदम के पेट को क़ब्र की मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती ।

(مسلم، کتاب الزکاۃ، باب لو ان لابن آدم وادیین لابتغی ثالثاً، ص۵۲۱، رقم: ۱۰۴۸)

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ देखा आप ने कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस क़दर जामेअ़ अन्दाज़ से ह़िर्स से मुतअ़ल्लिक़ हमारी रहनुमाई फ़रमाई कि इन्सान की ह़िर्स कभी पूरी नहीं होती, अगर उसे सोने से भरी वादियां भी मिल जाएं तब भी मज़ीद की ख़्वाहिश करता है और हरगिज़ वोह येह नहीं समझता कि बस अब मुझे मालो दौलत की ज़रूरत नहीं क्यूंकि येह चीज़ तो उस मरीज़ुल ह़िर्स (या'नी ह़िर्स के मरीज़) की रगो पै में ख़ून की त़रह़ रच बस चुकी होती है, लिहाज़ा वक़्त गुज़रने के साथ साथ उस की ह़िर्स में कमी आने के बजाए मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है, बिल आख़िर वक़्ते अजल आ पहुंचता है, मौत उस की ज़िन्दगी का चराग़ गुल कर देती है और एक ही झटके में उस के ख़्वाबों का मह़ल चकना चूर हो जाता है । बेशक जिस ख़ुश नसीब के पास क़नाअ़त की दौलत होती है वोह सुकून व इत़मीनान की ज़िन्दगी बसर करता है, इस के बर अ़क्स जिस के दिलो दिमाग़ में ह़िर्स की नुहूसत घर कर जाती है उसे बसा अवक़ात जीते जी उस ह़िर्स का अन्जाम भुगतना पड़ता है । आइये ! एक ऐसे अह़मक़ और ह़रीस शख़्स का वाक़िआ़ सुनते हैं जिसे इ़ज़्ज़त की दाल-रोटी नसीब थी मगर अच्छा खाने की ह़िर्स ने

www.dawateislami.net

उसे एक मालदार दोस्त के तल्वे चाटने पर मजबूर कर दिया, जिस की वज्ह से न सिर्फ़ उस की इ़ज़्ज़ते नफ़्स मजरूह़ हो कर रह गई बल्कि उसे ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना भी करना पड़ा चुनान्चे,

लालच बुरी बला है

एक ग़रीब आदमी के तीन बेटे थे, जो कुछ उसे दाल-रोटी मुयस्सर आती ख़ुद भी खाता और उन्हें भी खिलाता । उन में से एक बेटा बाप की ग़ुर्बत और दाल-रोटी से ना ख़ुश रहता था, चुनान्चे, उस ने एक दौलतमन्द नौजवान से दोस्ती कर ली और अच्छा खाना मिलने के लालच में उस के घर आने जाने लगा । एक दिन उन के दरमियान किसी बात पर अन-बन हो गई । दौलतमन्द ने अपनी अमीरी के ग़ुरूर में उसे ख़ूब मारा-पीटा और उस के दांत तोड़ डाले । तब वोह ग़रीब दिल ही दिल में तौबा करते हुवे कहने लगा कि मेरे बाप की प्यार से दी हुई दाल-रोटी इस मार-धाड़ और ज़िल्लत के तर निवाले से बेहतर है, अगर मैं अच्छे खाने पीने की हिर्स न करता तो आज इतनी मार न खाता और मेरे दांत नहीं टूटते ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत में बिल ख़ुसूस उन लोगों के लिये इ़ब्रत के बे शुमार मदनी फूल हैं कि जो जाइज़ो नाजाइज़ और ह़रामो ह़लाल की परवा किये बिग़ैर मालो दौलत या जाह (या'नी इ़ज़्ज़त) व मन्सब वग़ैरा की हवस में अपनी आख़िरत को दाव पर लगा देते, दर दर की ठोकरें खाते और फिर बा'द में पछताते हैं । याद रखिये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिस का जितना रिज़्क़ मुक़द्दर फ़रमा दिया है उसे वोह मिल कर रहेगा, लिहाज़ा ज़ियादा की ख़्वाहिश रखना बेकार है जैसा कि एक देहाती ने अपने भाई को हिर्स करने पर मलामत करते हुवे कहा : ऐ मेरे भाई ! एक चीज़ को तुम ढूंड रहे हो और एक चीज़ ख़ुद तुम्हें ढूंड रही है, जो चीज़ तुम्हें ढूंड रही है (या'नी मौत)

www.dawateislami.net

तुम उस से बच नहीं सकते और जो चीज़ तुम ढूंड रहे हो (या'नी रिज़्क़) वोह तो तुम्हें पहले ही ह़ासिल है। शायद तुम येह समझते हो कि जो (दुन्या का) ह़रीस होता उसे सब कुछ मिल जाता है और जो (इस से) बे रग़बती इख़्तियार करने वाला होता है वोह महरूम रह जाता है (ह़ालांकि येह तुम्हारी बहुत बड़ी ग़लत़ फ़हमी है।) (اِحیاء العلوم، کتاب ذم البخل...الخ، بیان ذم الحرص...الخ، ۳/۲۹۶ ملتقطاً)

वाक़ेई उस आ'राबी की येह बात ह़क़ीक़त पर मब्नी है कि न तो ह़िर्स के सबब बन्दे के रिज़्क़ में इज़ाफ़ा होता है और न ही बे रग़बती की वज्ह से कमी होती है, लिहाज़ा ह़िर्स से बचते हुवे क़नाअ़त इख़्तियार करनी चाहिये क्यूंकि क़नाअ़त इख़्तियार करने में फ़ाइदा ही फ़ाइदा है जब कि ह़िर्स में दुन्या व आख़िरत का ख़सारा ही ख़सारा है जैसा कि

बलअ़म बिन बाऊ़रा की बरबादी का सबब

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 539 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **'मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत'** के सफ़ह़ा नम्बर 367 पर है : (बलअ़म बाऊ़रा) बनी इस्राईल में बहुत बड़ा आ़लिम था। मुस्तजाबुद्दा'वात था (या'नी उस की दुआ़ क़बूल होती थी) लोगों ने उस को बहुत सा माल दिया कि (ह़ज़रते सय्यिदुना) मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये बद दुआ़ करे। ख़बीस लालच में आ गया और बद दुआ़ करनी चाही, जो अल्फ़ाज़ (ह़ज़रते सय्यिदुना) मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये कहना चाहता था, अपने लिये निकलते थे **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने उस को हलाक कर दिया।

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नुमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने जो आबाद थे वोह महल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि बलअ़म बिन बाऊ़रा जो कि अपने दौर का बहुत बड़ा आ़लिम और आ़बिदो ज़ाहिद था, इस को

www.dawateislami.net

इस्मे आ'ज़म का भी इ़ल्म था, येह अपनी जगह बैठा हुवा अपनी रूहानिय्यत से अ़र्शे आ'ज़म को देख लिया करता था, मुस्तजाबुद्दा'वात था या'नी बारगाहे इलाही में इस की दुआ़एं मक़्बूल हुवा करती थीं, इस के शागिर्दों की ता'दाद भी बहुत ज़ियादा थी। मश्हूर येह है कि इस की दर्सगाह में त़लबाए इ़ल्मे दीन की दवातें बारह हज़ार थीं मगर आह ! इस क़दर मक़्बूले बारगाह होने के बा वुजूद मालो दौलत पाने की हि़र्स ने बलअ़म बिन बाऊ़रा जैसे आ़बिदो ज़ाहिद को कहीं का न छोड़ा, हि़र्स की वज्ह से येह बद बख़्त, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों की ना शुक्री करते हुवे उस के प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ख़िलाफ़ बद दुआ़ करने पर आमादा हो गया, नतीजतन बारगाहे इलाही से धुतकार दिया गया, इस की सारी इ़बादतें ज़ाएअ़ हो गईं, इस की विलायत सल्ब हो गई और ज़िल्लतो रुस्वाई इस का मुक़द्दर बन गई। येह हि़कायत उन लोगों के लिये ज़बरदस्त ताज़ियानए इ़ब्रत है कि जिन्हें दीनी या दुन्यवी मन्सब मिलने के सबब मख़्लूक़े ख़ुदा में इ़ज़्ज़तो शोहरत और ख़ास मक़ामो मर्तबा ह़ासिल होता है मगर वोह अपने रुत्बे का नाजाइज़ फ़ाइदा उठाते हैं और शरई़ हुदूद व क़वानीन से तजावुज़ करते हुवे न सिर्फ़ ख़ियानत के मुर्तकिब होते हैं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और मख़्लूक़े ख़ुदा की दिल शिकनी का सबब भी बनते हैं, ऐसों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से हरगिज़ बे ख़ौफ़ नहीं रहना चाहिये।

दौलते दुन्या से बे रग़बत मुझे कर दीजिये
मेरी ह़ाजत से मुझे ज़ाइद न करना मालदार

(वसाइले बख़्शिश, स. 218)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आइये ! अब एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की एक दुन्यादार शख़्स को की गई नसीह़त पर मब्नी एक सबक़ आमोज़ हि़कायत सुनिये और इ़ब्रत के मदनी फूल चुनिये। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

ह़रीस शख़्स फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल होता है

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने एक दुन्यादार मुसलमान भाई को नसीह़त आमोज़ ख़त़ लिखा कि मुझे बताइये कि आप दुन्या के कामों में अनथक कोशिश करते और दुन्या ही के कामों का लालच करते हैं, क्या आप को दुन्या में वोह चीज़ मिली जो आप चाहते थे और क्या आप की सारी तमन्नाएं पूरी हो गईं ? उस शख़्स ने जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नहीं । बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : ग़ौर कीजिये ! जिस चीज़ के आप इस क़दर ह़रीस हैं जब वोह आप को नहीं मिल सकी तो आख़िरत जिस की त़रफ़ आप की बिल्कुल तवज्जोह ही नहीं और जिस से आप ने चश्म पोशी इख़्तियार की हुई है, उस की ने'मतें कैसे ह़ासिल कर सकेंगे ? मेरे ख़याल में आप सिर्फ़ ठन्डे लौहे पर ज़र्ब लगा रहे हैं । (या'नी आप एक बे फ़ाइदा काम कर रहे हैं)

(قوت القلوب، الفصل الثامن و العشرون، ذکر المقال الاول من المراقبۃ، ۱/۱۷۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि उन बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कितने प्यारे अन्दाज़ में उस ह़रीस और दुन्यादार को नसीह़त करते हुवे येह मदनी सोच फ़राहम की, कि देखो ! तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को राज़ी करने और अपनी क़ब्रो आख़िरत संवारने के बजाए शबो रोज़ इस फ़ानी व बे वफ़ा दुन्या के धोके में मुब्तला हो कर मह़ज़ फ़ानी मालो जाह के ह़ुसूल की ह़िर्स लिये उस की तगो दो में मश्ग़ूल हो, ह़ालांकि जो दुन्या के पीछे भागता है दुन्या उसे और भगाती है, जो इस दुन्या से दिल लगाता है बिल आख़िर वोह रन्जो ग़म पाता है । वक़्त, सिह़ह़त, मौसिम और ह़ालात की परवा किये बिग़ैर इस क़दर ख़ून पसीना बहाने के बा वुजूद भी अगर तुम्हारी रसाई मालो दौलत और दुन्यावी आसाइशों तक नहीं हो सकी तो उख़रवी ने'मतों और आसाइशों तक तुम्हारी रसाई किस त़रह़ मुमकिन है ह़ालांकि इस के लिये तुम ने कोई मेह़नत व कोशिश भी नहीं की ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हमें भी चाहिये कि सिर्फ़ दुन्या की फ़िक्र करने के बजाए जितना क़लील अ़र्से दुन्या में रहना है, इतनी दुन्या की फ़िक्र करें और जितना त़वील अ़र्सा क़ब्रो आख़िरत का है उतनी क़ब्रो आख़िरत की फ़िक्र किया करें, हमारे अस्लाफ़ व बुज़ुर्गाने दीन दुन्या की कम और आख़िरत की ज़ियादा फ़िक्र किया करते थे और दूसरों को भी इसी की तरग़ीब दिलाया करते थे जैसा कि,

त़वील सफ़र का ज़ादे राह

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने का'बे के पास खड़े हो कर पुकारा : ऐ लोगो ! मैं जुन्दब ग़िफ़ारी हूं, इधर आओ अपने ख़ैर ख़्वाह शफ़ीक़ भाई के पास, जब तमाम लोग उन के इर्द गिर्द जम्अ़ हो गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा : येह बताओ कि अगर तुम में से किसी का सफ़र का इरादा हो तो क्या वोह अपने साथ ज़ादे राह न लेगा जो उसे काम आए और मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचा दे ? सब ने अ़र्ज़ की : हां, क्यूं नहीं, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (उन्हें दुन्या की ह़िर्स से बचाने और आख़िरत की ह़िर्स की तरग़ीब दिलाने के लिये नसीह़त करते हुवे) इरशाद फ़रमाया : यक़ीनन सफ़रे आख़िरत उस सफ़र से कहीं ज़ियादा त़वील है जिस का तुम (यहां) इरादा करते हो, लिहाज़ा (उस के लिये) वोह चीज़ें ले लेना जो तुम्हें फ़ाइदा दें। लोगों ने पूछा कि वोह क्या चीज़ें हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अ़ज़ीम मक़ासिद के लिये ह़ज करो, क़ियामत के त़वील दिन के पेशे नज़र सख़्त गर्मी में रोज़ा रखो, क़ब्र की वह्शत से बचने के लिये रात की तारीकी में नवाफ़िल पढ़ो, (उस) बड़े दिन में खड़े होने का ख़याल करते हुवे अच्छी बात कहो और बुरी बात से बाज़ रहो, क़ियामत की दुश्वारी से बचने की उम्मीद पर अपने माल से सदक़ा अदा करो, दुन्या में दो मजलिसें इख़्तियार करो एक त़लबे ह़लाल के लिये और दूसरी त़लबे आख़िरत के लिये इन के इ़लावा तीसरी मजलिस का इरादा न

www.dawateislami.net

करना क्यूंकि वोह फ़ाइदे के बजाए तुम्हें नुक़्सान पहुंचाएगी। इसी त़रह़ माल के दो हि़स्से कर लो, एक हि़स्सा अपने अहलो इ़याल पर ह़लाल त़रीक़े से ख़र्च करो और दूसरा अपनी आख़िरत के लिये आगे बढ़ा दो (या'नी सदक़ा कर दो) इन के इ़लावा कोई तीसरा हि़स्सा न करना कि वोह तुम्हें फ़ाइदे के बजाए नुक़्सान पहुंचाएगा। फिर बुलन्द आवाज़ में पुकारते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! हि़र्स (से बचो कि इस) में तुम्हारे लिये हलाकत है, तुम हि़र्स को कभी पूरा नहीं कर सकते हो। (صفۃ الصفوۃ، ابو ذر جُنْدُب بن جُنَادۃ، الجزء: ۱، ۱/۳۰۱-۳۰۲، رقم: ۶۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेकियों की हि़र्स पैदा कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई हम में से हर एक को आख़िरत का त़वील सफ़र दरपेश है और कामयाबी से मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचने के लिये बत़ौरे ज़ादे राह ब कसरत नेक आ'माल की ज़रूरत है, अगर क़ियामत के दिन नेकियों का पलड़ा भारी होने के लिये एक भी नेकी कम पड़ गई तो मां-बाप, बहन भाई और बीवी बच्चों में से कोई भी काम न आएगा, लिहाज़ा अगर ह़रीस बनना ही है तो नेकियों के ह़रीस बनना चाहिये कि हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी वक़्तन फ़ वक़्तन आख़िरत से मह़ब्बत करने और नेकियों का ह़रीस बनने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई है।

आइये इस ज़िम्न में चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

1. जो शख़्स अपनी दुन्या से मह़ब्बत करता है वोह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाता है और जो शख़्स अपनी आख़िरत से मह़ब्बत करता है वोह अपनी दुन्या को नुक़्सान पहुंचाता है, पस फ़ना होने वाली (दुन्या) पर बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को तरजीह़ दो।

(مسند امام احمد، حدیث ابی موسی الاشعری، ۷/۱۶۵، حدیث ۱۹۷۱۷)

www.dawateislami.net

2. حُبُّ الدُّنْيَا رَأْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ या'नी दुन्या की महब्बत हर गुनाह की अस्ल है।

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا، کتاب ذم الدنیا، الجزء الاوّل، ۵/۲۲، حدیث۹)

3. يَاعَجَبًا كُلُّ الْعَجَبِ لِلْمُصَدِّقِ بِدَارِ الْخُلُوْدِ وَهُوَ يَسْعٰى لِدَارِ الْغُرُوْرِ या'नी उस शख़्स पर बहुत तअ़ज्जुब है जो हमेशा के घर (या'नी आख़िरत) की तस्दीक़ करता है हालांकि वोह धोके वाले घर (या'नी दुन्या) के लिये कोशिश कर रहा होता है। (مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب ما ذکر عن نبینا فی الزھد، ۸/۱۳۳، حدیث۶۱)

4. اَحْرِصْ عَلٰى مَا يَنْفَعُكَ وَاسْتَعِنْ بِاللّٰهِ وَلَا تَعْجِزْ या'नी उस चीज़ पर हिर्स करो जो तुम्हें नफ़्अ़ दे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मदद मांगो और आ़जिज़ न हो जाओ। (مسلم، کتاب القدر، باب فی الامر بالقوۃ... الخ، حدیث:۲۶۶۴، ص۱۴۳۲)

शारहे मुस्लिम हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शरफ़ुद्दीन नववी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आख़िरी ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में ख़ूब हिर्स करो और इस पर इन्आ़म का लालच रखो मगर इस इ़बादत में भी अपनी कोशिश पर भरोसा करने के बजाए **अल्लाह** तआ़ला से मदद मांगो। (شرح نووی، باب الایمان للقدر و الاذعان لہ، الجزء:۱۶، ۸/۲۱۵ ملخصاً)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़क़ीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि दुन्यावी चीज़ों में क़नाअ़त और सब्र अच्छा है मगर आख़िरत की चीज़ों में हिर्स और बे सब्री आ'ला है, दीन के किसी दरजे पर पहुंच कर क़नाअ़त न कर लो आगे बढ़ने की कोशिश करो।

(मिरआतुल मनाजीह, 7/112)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूम हुवा कि हर हिर्स क़बीह़ (या'नी बुरी) नहीं बल्कि जो हिर्स आख़िरत से मुतअ़ल्लिक़ा उमूर पर मब्नी हो वोह क़ाबिले ता'रीफ़ है, नीज़ येह भी पता चला कि इन्सान कितनी ही नेकियां कर ले मगर नेकियों की

www.dawateislami.net

ह़िर्स में कमी नहीं आनी चाहिये, अलबत्ता दुन्यावी मुआ़मलात में क़नाअ़त करना अच्छी चीज़ है। आइये ! क़नाअ़त की ता'रीफ़ और इस की फ़ज़ीलत के बारे में सुनते हैं :

क़नाअ़त की ता'रीफ़

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि इन्सान को जो कुछ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिल जाए उस पर राज़ी हो कर ज़िन्दगी बसर करते हुवे ह़िर्स और लालच को छोड़ देने को क़नाअ़त कहते हैं। (जन्नती ज़ेवर, स. 136 बित्तग़य्युरिन क़लील) जब कि अ़ल्लामा मीर सय्यिद शरीफ़ जुरजानी ह़नफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه क़नाअ़त की ता'रीफ़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : هِیَ السُّکُوْنُ عِنْدَ عَدَمِ الْمَاْلُوْفَاتِ या'नी रोज़ मर्रा इस्ति'माल होने वाली चीज़ों के न होने पर भी राज़ी रहना क़नाअ़त है।

(التعریفات للجرجانی، باب القاف، تحت اللفظ: القناعۃ، ص۱۲۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये कि अस्ल मालदारी येह नहीं कि इन्सान के पास कसीर मालो दौलत हो बल्कि अस्ल मालदारी तो येह है कि अगर्चे माल कम हो मगर उस पर क़नाअ़त ह़ासिल हो, क्यूंकि मालो दौलत वाला शख़्स ऐसा मालदार है कि उसे कितना ही कसीर माल मिल जाए मगर मज़ीद माल की ख़्वाहिश बाक़ी रहती और इस माल में कमी भी आती रहती है जब कि क़नाअ़त करने वाला शख़्स ऐसा मालदार है कि उस के पास कितना ही कम माल क्यूं न हो मगर वोह मज़ीद की तमन्ना नहीं करता नीज़ क़नाअ़त की दौलत में कमी भी नहीं आती, बहर ह़ाल क़नाअ़त उ़म्दा आ़दत है और जिसे नसीब हो जाए वोह दुन्या व आख़िरत में कामयाब है।

आइये क़नाअ़त की रग़बत अपने दिल में पैदा करने के लिये इस ज़िम्न में चन्द रिवायात सुनते हैं :

www.dawateislami.net

ज़ियादा मालदार कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे बन्दों में सब से ज़ियादा मालदार कौन है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : वोह शख़्स जो मेरी दी हुई चीज़ पर सब से ज़ियादा क़नाअ़त करने वाला है ।

(ابنِ عساکر، موسیٰ بن عمران بن یصھر بن قامث، ۶۱/ ۱۳۹، رقم: ۷۷۴۱)

ह़क़ीक़ी मालदारी

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : لَیْسَ الْغِنٰی عَنْ کَثْرَۃِ الْعَرَضِ، وَلٰکِنَّ الْغِنٰی غِنَی النَّفْسِ या'नी तवंगरी (मालदारी) येह नहीं कि साज़ो सामान की कसरत हो बल्कि अस्ल तवंगरी तो दिल का तवंगर (या'नी मालदार) होना है ।

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب الغنی غنی النفس، ۴/ ۲۳۳، حدیث ۶۴۴۶)

कामयाब मुसलमान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : قَدْ اَفْلَحَ مَنْ اَسْلَمَ، وَرُزِقَ کَفَافًا، وَقَنَّعَہُ اللّٰہُ بِمَا اٰتَاہُ या'नी बेशक कामयाब हो गया वोह शख़्स जो इस्लाम लाया और उसे ब क़दरे किफ़ायत रिज़्क़ दिया गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे जो कुछ दिया उस पर क़नाअ़त भी अ़त़ा फ़रमाई ।

(مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فی الکفاف والقناعۃ، ص ۵۲۴، حدیث: ۱۰۵۴)

दौलते बे ज़वाल

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया اَلْقَنَاعَۃُ کَنْزٌ لَا یَفْنٰی या'नी क़नाअ़त कभी न ख़त्म होने वाला ख़ज़ाना है ।

(الزھد الکبیر، ص ۸۸، حدیث: ۱۰۴)

www.dawateislami.net

दुआए रसूल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की : اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ رِزْقَ اٰلِ مُحَمَّدٍ قُوْتاً (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुह़म्मद की आल को सिर्फ़ ज़रूरत के मुत़ाबिक़ रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा।

(مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فی الکفاف والقناعۃ، ص۵۲۴، الحدیث:۱۰۵۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायात में उन लोगों के लिये ढारस है जो क़लील वसाइल व कम आमदनी का रोना रोने के बजाए ब क़दरे ज़रूरत रिज़्क़ व माल पर क़नाअ़त करते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहते हैं और ज़बान पर शिक्वए रन्जो अलम लाने से बचते हैं। यक़ीनन येह सब इसी क़नाअ़त के दाइमी ख़ज़ाने की बरकात हैं। नीज़ येह भी पता चला कि हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी अपने अहलो इ़याल के लिये सिर्फ़ ब क़दरे ज़रूरत रिज़्क़ अ़त़ा होने की दुआ़ मांगी, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि क़लील वसाइल पर क़नाअ़त कर के इस की बरकतें ह़ासिल करें। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن सरापा क़नाअ़त हुवा करते थे, उन के नज़दीक माल की कोई वक़्अ़त व अहम्मिय्यत न थी येही वज्ह है कि वोह ह़ज़रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा पर राज़ी रहते हुवे निहायत सादगी से ज़िन्दगी गुज़ारा करते थे।

आइये ! आप की तरग़ीबो तह़रीस के लिये क़नाअ़त पसन्दी के दो इन्तिहाई दिलचस्प और नसीह़त आमोज़ वाक़िआ़त अ़र्ज़ करता हूं। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

एक वलिय्ये कामिल का अन्दाज़े क़नाअ़त

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब '**फ़ैज़ाने सुन्नत**' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 491 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : अपने दौर के जय्यद आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लील बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में अहवाज़ से अमीर (या'नी ह़ाकिम) सुलैमान बिन अ़ली का नुमाइन्दा ख़ुसूसी ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : शहज़ादों की ता'लीमो तर्बिय्यत के लिये ह़ाकिम ने आप को शाही दरबार में त़लब फ़रमाया है। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लील बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सूखी रोटी का टुकड़ा दिखाते हुवे जवाब इरशाद फ़रमाया : मेरे पास जब तक येह सूखी रोटी का टुकड़ा मौजूद है मुझे दरबारे शाही की चाकरी की कोई ह़ाजत नहीं।

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की क़नाअ़त पसन्दी

इसी त़रह़ मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी, मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी अल मदनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का जज़्बए क़नाअ़त भी ह़ैरत अंगेज़ और लाइक़े तक़्लीद था। जामिअ़तुल मदीना हो या दारुल इफ़्ता, मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कभी तनख़्वाह बढ़ाने का मुत़ालबा नहीं किया। मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान مُدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي का बयान है कि ह़ाल ही में (या'नी उन की वफ़ात से कुछ अ़र्से क़ब्ल) उन का मुशाहरा (या'नी वज़ीफ़ा) बढ़ा था तो येह मेरे घर ख़ुद तशरीफ़ लाए। इन्तिहाई परेशानी के आ़लम में थे। मुझ से फ़रमाने लगे कि मेरी तनख़्वाह काफ़ी बढ़ गई है, मुझे इस ज़ाइद रक़म की ह़ाजत नहीं है, लिहाज़ा मुझ पर करम किया जाए और मेरा मुशाहरा (या'नी वज़ीफ़ा) न बढ़ाया जाए। अपने इन्तिक़ाल से कुछ अ़र्से क़ब्ल मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी स्कूटर (मोटर साईकिल) और लेपटॉप

www.dawateislami.net

(Laptop) कम्प्यूटर वग़ैरा सब बेच दिया था और फ़रमाया कि अब मुझे इस की ज़रूरत नहीं है। इसी त़रह़ एक मरतबा जब आप किराए पर मकान लेना चाह रहे थे तो किसी ने मश्वरा दिया कि आप मकान ख़रीद क्यूं नहीं लेते ? तो फ़रमाया कि मुख़्तसर ज़िन्दगी है, किराए का मकान ही काफ़ी है।

(मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी, स. 44)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ देखा आप ने कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की सोच किस क़दर उ़म्दा हुवा करती थी कि अगर उन्हें जाइज़ त़रीक़े से भी ज़रूरत से ज़ाइद माल वग़ैरा मिल रहा होता तो परेशान हो जाते और ह़त्तल इमकान माले दुन्या को अपने आप से दूर रखते।

आइये इस ज़िम्न में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मदनी सोच और माले दुन्या से बे रग़बती के बारे में भी सुनते हैं :

अमीरे अहले सुन्नत की दुन्या से बे रग़बती

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कुर्ते पर सीने की त़रफ़ दो जेबें होती हैं। मिस्वाक शरीफ़ रखने के लिये आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने उलटे हाथ (या'नी दिल की जानिब) वाली जेब के बराबर एक छोटी सी जेब बनवाते हैं। इस का सबब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने येह इरशाद फ़रमाया कि मैं चाहता हूं कि येह आलए अदाए सुन्नत (या'नी मिस्वाक) मेरे दिल से क़रीब रहे। इस के बर अ़क्स दुन्यवी दौलत से बे रग़बती का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को देखा गया है कि जब कभी ज़रूरतन जेब में रक़म रखनी पड़े तो सीधे हाथ वाली जेब में रखते हैं। इस की ह़िक्मत दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया : मैं उलटे हाथ वाली जेब में रक़म इस लिये नहीं रखता कि दुन्यवी दौलत दिल से लगी रहेगी और येह मुझे गवारा नहीं, लिहाज़ा मैं ज़रूरत पड़ने पर रक़म सीधी जानिब वाली जेब में ही रखता हूं। (फ़िक्रे मदीना, स. 121)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि अस्लाफ़ व बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे ग़ैर ज़रूरी माल का ख़याल अपने दिल से निकाल कर क़नाअ़त की दौलते ला ज़वाल से ख़ुद को माला माल करें, यक़ीन कीजिये कि अगर क़नाअ़त की दौलत हमें नसीब हो गई तो हिर्से माल की आफ़त से ख़ुद ब ख़ुद नजात हासिल हो जाएगी।

किताब "हिर्स" का तआरुफ़

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से किताब बनाम 'हिर्स' शाएअ़ हुई है, जिस में हिर्स व क़नाअ़त के मुतअ़ल्लिक़ इन्तिहाई अनमोल मा'लूमात फ़राहम की गई हैं मसलन हिर्स किसे कहते हैं ? हिर्स किन किन चीज़ों में हो सकती है ? इस की कितनी क़िस्में हैं ? हमें कौन सी चीज़ों की हिर्स रखनी चाहिये ? किन अश्या की हिर्स दुन्या व आख़िरत के लिये नुक़्सान देह है ? ऐसी हिर्स को कैसे ख़त्म किया जा सकता है ? माल की हिर्स कब अच्छी है और किस सूरत में बुरी है नीज़ इस के साथ साथ क़नाअ़त के फ़ज़ाइलो बरकात और क़नाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के वाक़िआ़त भी इस किताब में मौजूद हैं, लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाइयों से मदनी इल्तिजा है कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से इस किताब को हदिय्यतन हासिल कर के न सिर्फ़ ख़ुद इस का मुत़ालआ़ कीजिये बल्कि दीगर इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये । इस किताब को दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से रीड किया (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाऊन लोड (Download) भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आऊट (Print Out) भी किया जा सकता है।

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने हिर्स के नुक़्सानात और क़नाअ़त की बरकात के बारे में सुना जिस से पता चला कि

www.dawateislami.net

हिर्स इन्सान को अन्धा कर देती है, जिस शख़्स के दिल में हिर्स की बीमारी पैदा हो जाए, गोया उस की आंखों पर लालच की पट्टी बन्ध जाती है, उसे अपने नफ़्अ़ व नुक़्सान की पहचान नहीं होती, वोह रात दिन मालो दौलत जम्अ़ करने की कोशिश में लगा रहता है, माल की लालच उसे मालदारों के आगे झुकने, उन का ग़ुलाम बनने और हुसूले माल के नाजाइज़ ज़राएअ़ इख़्तियार करने पर मजबूर कर देती है ह़त्ता कि हिर्स व लालच की ख़स्लते बद, लालची आदमी को बे हिस, बे रह़म और ज़ालिम व जफ़ाकार बना देती है, हुसूले माल के लिये वोह अपने पराए किसी का ख़याल नहीं करता, दीनी ए'तिबार से हिर्स के नुक़्सान का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में इस क़दर नुक़्सान का बाइस नहीं बनते कि जिस क़दर लालच, इन्सान के दीन के लिये नुक़्सान का बाइस बनता है, लिहाज़ा हिर्से दुन्या व माल से बचते हुवे क़नाअ़त इख़्तियार करनी चाहिये क्यूंकि दुन्यावी माल तो ख़त्म हो जाता है मगर क़नाअ़त जो कि ह़क़ीक़ी दौलत है कभी ख़त्म नहीं होती, ह़दीसे पाक की रू से कामयाब शख़्स वोह है जो इस्लाम लाया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे ब क़दरे ज़रूरत रिज़्क़ अ़ता फ़रमा कर उस पर सब्रो क़नाअ़त करने की तौफ़ीक़ बख़्शी, ख़ुद हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी अपने अहले बैते अत़्हार رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के लिये ब क़दरे ज़रूरत रिज़्क़ ही की दुआ मांगी, हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن भी ग़ैर ज़रूरी माल से बचते और जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिल जाता उसी पर सब्रो शुक्र करते हुवे ज़िन्दगी गुज़ारा करते थे, अलबत्ता वोह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या नेकियों के मुआ़मले में दुन्यावी ह़रीस से भी कहीं ज़ियादा ह़रीस हुवा करते थे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी हिर्स की तबाह कारियों से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे दुन्यावी मुआ़मलात में क़नाअ़त और उख़रवी मुआ़मलात में हिर्स से काम लेने की तौफ़ीफ़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का क़ियाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हिर्से माल व ज़र से बचने, नेकियों की हिर्स अपने दिल में पैदा करने और दीन का ख़ूब ख़ूब मदनी काम करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी ता दमे तह़रीर 97 शो'बाजात में दीन का काम कर रही है, इन्ही में से एक शो'बा "**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत**" भी है । दौरे जदीद में मुसलमानों को मुख़्तलिफ़ शो'बहाए ज़िन्दगी में आए दिन ऐसे सेंकड़ों नित नए मसाइल का सामना रहता है कि जिन के ह़ल के लिये बेदार मग़्ज़ और आ'ला इल्मी सलाहिय्यत रखने वाले मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की बारगाह में रुजूअ़ करना बेह़द ज़रूरी था, लिहाज़ा वक़्त की ज़रूरत के पेशे नज़र शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को दा'वते इस्लामी के तह़्त दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत क़ाइम करने की शदीद ख़्वाहिश हुई, जिस का इज़्हार एक मरतबा आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने यूं फ़रमाया اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हम 12 दारुल इफ़्ता खोलेंगे ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का येह ख़्वाब 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सिने 1421 हिजरी को उस वक़्त पूरा हुवा कि जब जामेअ़ मस्जिद कन्ज़ुल ईमान, बाबरी चौक बाबुल मदीना (कराची) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का आग़ाज़ हुवा, ता दमे तह़रीर दारुल इफ़्ता से मुतअ़ल्लिक़ कमो बेश 42 उ़लमाए किराम, जिन में मुसद्दिक़ व मुफ़्ती भी हैं, नाइब मुफ़्ती और मुत-ख़सिस भी हैं, येह मुख़्तलिफ़ शहरों में प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की शरई रहनुमाई में मसरूफ़ हैं, जिन से शरई रहनुमाई के लिये न सिर्फ़ बिल मुशाफ़ा मुलाक़ात की जा सकती है बल्कि तह़रीरी फ़तवा भी ह़ासिल किया जा सकता है । इस के इ़लावा "**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत**" के तह़्त काम करने वाले शो'बे "**दारुल**

www.dawateislami.net

इफ़्ता ऑन लाइन'' के उ़लमाए किराम भी इन्तिहाई ज़िम्मेदारी के साथ टेलीफ़ोन और इन्टरनेट पर दुन्या भर के मुसलमानों की त़रफ़ से पूछे जाने वाले मसाइल का ह़त्तल इमकान हाथों हाथ शरई ह़ल बताते हैं। दारुल इफ़्ता ऑन लाइन से, इन्टरनेट के ज़रीए़, दुन्या भर से इस मेल एड्रेस (darulifta@dawateislami.net) से सुवालात के जवाबात पूछे जा सकते हैं। दुन्या भर से हाथों हाथ शरई रहनुमाई ह़ासिल करने के लिये, इन नम्बर्ज़ पर राबित़ा भी किया जा सकता है। नम्बर नोट फ़रमा लीजिये।

0300-0220112 0300-0220113
0300-0220114 0300-0220115

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

12 मदनी कामों में हि़स्सा लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहते हुवे इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने, नेकियों की हि़र्स पैदा करने, दुन्या व माले दुन्या की हि़र्स से बचने और गुनाहों से पीछा छुड़ाने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हि़स्सा लेना चाहिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से **हफ़्तावार** एक मदनी काम **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में शिर्कत भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुल्क व बैरूने मुल्क में बे शुमार मक़ामात पर येह इजतिमाअ़ होता है, जिस में कसीरहा कसीर आ़शिक़ाने रसूल, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व खुशनूदी की ख़ात़िर अपनी मसरूफ़िय्यात तर्क कर के खुद भी तशरीफ़ लाते और इस की बरकतें पाते हैं और दीगर इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी अपने हमराह इजतिमाअ़ में ला कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाते हैं। इन इजतिमाआ़त में तिलावत व ज़िक्रो ना'त के इ़लावा सुन्नतों भरा बयान भी होता है जिस के ज़रीए़ कसीर इ़ल्मे दीन ह़ासिल होता है। याद रहे ! कि इ़ल्मे दीन की मजलिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की

www.dawateislami.net

पसन्दीदा मजलिस है, ख़ुद नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अस्हाबे सुफ़्फ़ा को इल्मे दीन सिखाने में मश्ग़ूल रहा करते थे नीज़ एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी मस्जिद में दो मजलिसों के पास से गुज़रे तो इरशाद फ़रमाया : दोनों मजलिसें अच्छी हैं मगर एक, दूसरी से अफ़्ज़ल है, (फिर एक मजलिस के बारे में इरशाद फ़रमाया कि) येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करते हैं और उस की त़रफ़ रग़बत करते हैं, अगर वोह चाहे तो इन को अ़त़ा कर दे और चाहे तो मन्अ़ कर दे (और दूसरी मजलिस के बारे में फ़रमाया कि) येह लोग फ़िक़्ही मसाइल और इल्म सीखते हैं और दूसरों को सिखाते हैं येही लोग अफ़्ज़ल हैं और बेशक मैं मुअ़ल्लिम बना कर भेजा गया हूं।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसी मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा हो गए।

(دارمی، باب فی فضل العلم و العالم، ۱/۱۱۱، حدیث: ۳۴۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज के पुर फ़ितन दौर में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" मुख़्तलिफ़ मुमालिक और शहरों में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त का इनइ़क़ाद कर के उम्मते मुस्लिमा को सुन्नतों भरा पाकीज़ा मदनी माह़ोल मुहय्या करने के साथ साथ उन्हें इल्मे दीन की दौलत से माला माल कर रही है। इन इजतिमाआ़त की बरकत से दिन ब दिन बे शुमार लोग गुनाहों से ताइब हो कर नेकियों की त़रफ़ माइल हो रहे हैं, आइये ! आप की तरग़ीब के लिये एक ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे,

मलीर (बाबुल मदीना कराची) के अ़लाक़े आ'ज़म पूरा, सब्ज़ टाऊन के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल मुयस्सर आने से क़ब्ल मेरी ज़िन्दगी के रात दिन गुनाहों में बसर हो रहे थे। ख़ुश क़िस्मती से मेरी क़िस्मत का सितारा चमक उठा जिस का सबब कुछ यूं बना कि एक रोज़ मैं अपने चचाज़ाद भाई से मिलने गया जिन्हें दा'वते

www.dawateislami.net

इस्लामी का मदनी माहोल नसीब था। उन्हों ने मेरे साथ ख़ैर ख़्वाही करते हुवे मुझे दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की न सिर्फ़ ज़बानी तौ़र पर दा'वत पेश की बल्कि अपने साथ ही इजतिमाअ़ में ले गए और यूं ज़िन्दगी में पहली बार मुझे फ़ैज़ाने मदीना में हाज़िरी की सआ़दत नसीब हुई। फ़ैज़ाने मदीना की बा रौनक़ फ़ज़ाओं में मेरी दिली कैफ़िय्यत बदल गई, वहां मुझे बहुत क़ल्बी सुकून मिल रहा था। पुर सोज़ तिलावत व ना'त, इस्लाह़ से भरपूर बयान, दिल को जिला देने (या'नी ज़िन्दा कर देने) वाले ज़िक्र और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने मेरी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया। मैं ने अपने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और मदनी माहोल से मुन्सलिक हो गया, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे का ताज सजा लिया और अपने चेहरे को दाढ़ी शरीफ़ के नूर से रोशन कर लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर ह़ल्क़ा मुशावरत में मदनी इन्आ़मात ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से मदनी कामों की तरक़्क़ी के लिये कोशा हूं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है: जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ الصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जूते पहनने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "101 मदनी फूल" से जूते पहनने की सुन्नतें और आदाब सुनते हैं।

❀ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है।

(مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب استحباب لبس النعال... الخ، ص۱۱۶۱، حدیث:۲۰۹۶)

❀ जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए। ❀ पहले सीधा जूता पहनिये फिर उलटा और उतारते वक़्त पहले उलटा जूता उतारिये फिर सीधा। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम में से कोई जूते पहने तो दाईं (या'नी सीधी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये और जब उतारे तो बाईं (या'नी उल्टी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये ताकि दायां (या'नी सीधा) पाउं पहनने में अव्वल और उतारने में आख़िरी रहे। (بخاری، کتاب اللباس، باب ینزع نعل الیسری، ۴/ ۶۵، حدیث:۵۸۵۵)

❀ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे।

❀ किसी ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कहा कि एक औ़रत (मर्दों की त़रह़) जूते पहनती है। उन्हों ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मर्दानी औ़रतों पर ला'नत फ़रमाई है।

(ابو داود، کتاب اللباس، باب لباس النسآء، ۴/ ۸۴، حدیث:۴۰۹۹)

सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي फरमाते हैं : या'नी औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इम्तियाज़

www.dawateislami.net

होता है उन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (या'नी नक़्क़ाली करने) से मुमानअ़त है, न मर्द औ़रत की वज़्अ़ (चाल-ढाल) इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3/422)

❀जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "सुन्नतें और आदाब" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह़ जब निकल कर
चले तुम गले लगाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान करने के मुतअ़ल्लिक़ मा'रूज़ात

(1) **बयान करने से पहले कम अज़ कम एक बार ज़रूर ज़रूर और ज़रूर पढ़ लें**
(2) **जो कुछ लिखा है वोही सुनाएं, अपनी त़रफ़ से कमी-बेशी न करें**
(3) **हेडिंग, ह़वालाजात, आयात, और अ़रबी इबारात हरगिज़ न पढ़ा करें**
(4) **बयान के ह़ुसूल के लिये अपनी काबीना के कारकर्दगी ज़िम्मेदार से राबित़ा रखें**
(5) **अगर बराहे रास्त बयान न मिल सके तो वेब साइट से डाऊन लोड कर लें**

✍ **राबित़ा** ✍

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

www.dawateislami.net

सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआ़

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

﴾4﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِىْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ क़ुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है !!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

﴾6﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है **:** जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج۲ص۳۲۹،حدیث ۳۱)

﴾1﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ۱۰ ص ۲۵٤ حدیث ۱۷۳۰۵)

﴾2﴿ हर रात इ़बादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल क़ुरआन सफ़ह़ा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ़ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया। लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये।

दुआ़ येह है **:**

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**)

www.dawateislami.net